

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 18 August 2026

हँसी-हँसी में राजनीति, हास्य ही प्रधानमंत्री मोदी को देता है खास बढ़त

Publisher

Published on 17 Sep 2025



भारतीय राजनीति में जहाँ वाद-विवाद, आरोप-प्रत्यारोप और गंभीर मुद्दे हमेशा सुर्खियों में रहते हैं, वहीं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने हास्य और चुटीले अंदाज़ को राजनीति का एक अनोखा हथियार बनाया है। यह केवल जनता को हँसाने या माहौल हल्का करने की कोशिश नहीं है, बल्कि एक ऐसी रणनीति है जो राजनीतिक तनाव को कम करती है और आलोचनाओं को सहजता से पलट देती है।

लोकतंत्र में जनता से सीधा संवाद सबसे बड़ा पूंजी होता है। मोदी की खासियत यह रही है कि वे गंभीर से गंभीर मुद्दे को भी इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि उसमें हल्की मुस्कान की झलक दिख जाए। उनके भाषणों में व्यंग्य और तंज भी होते हैं, मगर उसमें कटुता कम और मज़ाक का पुट अधिक होता है। यही कारण है कि श्रोता अक्सर गंभीर बातों को भी सहजता से ग्रहण कर लेते हैं।

मोदी के भाषणों में हास्य का प्रयोग

1. जनसभाएँ और चुनावी रैलियाँ:

चुनावी मंच पर मोदी अक्सर विपक्षी दलों पर निशाना साधते समय व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ करते हैं। कभी विपक्षी गठबंधन को “महागठबंधन नहीं, महामिलावट” कहते हैं, तो कभी किसी नारे को चुटीले अंदाज़ में पलट देते हैं।

2. संसद और राजनीतिक बहस :

संसद के भीतर भी वे कई बार गंभीर बहस के दौरान तंज कसकर माहौल हल्का कर देते हैं। इससे विपक्ष असहज हो जाता है, और सत्ता पक्ष का मनोबल बढ़ता है।

3. सार्वजनिक समारोह :

चाहे अंतरराष्ट्रीय मंच हो या देश के भीतर का कोई सांस्कृतिक कार्यक्रम, मोदी अक्सर अपने संबोधन में मज़ाक का तड़का लगाना नहीं भूलते। यह उन्हें एक “जनप्रिय नेता” की छवि देता है।

हास्य का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह **नेता और जनता के बीच की दूरी को कम करता है**। जब प्रधानमंत्री गंभीर विषयों को हल्के अंदाज़ में रखते हैं, तो आम आदमी को लगता है कि वह भी इस बातचीत का हिस्सा है। मोदी की भाषा सरल है, कठिन शब्दों से रहित है। वे अक्सर अपने बचपन, चाय बेचने के अनुभव या लोकभाषा के मुहावरों का प्रयोग करते हैं। इससे जनता को महसूस होता है कि नेता उनकी ज़िंदगी और संस्कृति को समझता है।

विपक्ष जब मोदी पर तीखे हमले करता है, तो अक्सर मोदी अपने हास्य-व्यंग्य के जरिए उसे पलट देते हैं। इससे विपक्ष का हमला हल्का हो जाता है। जनता के बीच यह संदेश जाता है कि प्रधानमंत्री आलोचना से डरते नहीं, बल्कि उसे मज़ाक में बदल देते हैं। यह रणनीति मोदी को मानसिक तौर पर भी बढ़त देती है।

जहाँ हास्य मोदी की ताकत है, वहीं इसकी सीमाएँ भी हैं।

1. संवेदनशील मुद्दों पर मज़ाक :

कभी-कभी विपक्ष आरोप लगाता है कि मोदी गंभीर विषयों को भी हल्के अंदाज़ में ले लेते हैं, जिससे समस्या की गहराई कम हो जाती है।

2. व्यक्तिगत व्यंग्य का खतरा :

हास्य और तंज अगर व्यक्तिगत स्तर पर किया जाए तो यह अपमानजनक भी माना जा सकता है।

3. अत्यधिक हास्य पर निर्भरता :

यदि भाषणों में बहुत अधिक मज़ाक हो जाए तो यह संदेश जा सकता है कि सरकार गंभीरता से काम नहीं कर रही।

चुनावी अभियानों में मोदी के भाषण अक्सर सोशल मीडिया पर वायरल हो जाते हैं। उनके मज़ाक और चुटकुले चुनावी रैलियों को रोचक बनाते हैं। मीडिया में बार-बार चर्चा होती है, जिससे संदेश दूर तक पहुँचता है। यह उनकी लोकप्रियता और चुनावी सफलता का अहम कारण माना जाता है।

मोदी का हास्य सिर्फ भारत तक सीमित नहीं है। संयुक्त राष्ट्र, अमेरिकी कांग्रेस, या जी-20 जैसे मंचों पर भी वे हल्के-फुल्के संवादों से माहौल सहज बना देते हैं। यह उनकी कूटनीति को मानवीय स्पर्श देता है और उन्हें वैश्विक मंच पर भी लोकप्रिय बनाता है।

राजनीति में गंभीरता आवश्यक है, लेकिन यदि उसमें हास्य का संतुलित प्रयोग हो, तो यह नेता को और प्रभावशाली बना देता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का हास्यभाव उनकी राजनीतिक पहचान का एक अहम हिस्सा है। यह न केवल उन्हें जनता से जोड़ता है, बल्कि विपक्षी आलोचनाओं को भी हल्का कर देता है।